कवितांश

विश्व मण्डी में

''मंडी'' जीभ लपलपाए
तैयार
''सामान'' खपत के लिए
तत्पर
मीडिया लगा रहा गुहार -
भोक्ता संस्कार है बरकरार-
बरकरार

एक के बाद एक सब देश
बिकने को लाचार
खड़े क्रमवार
लगाए बाजार में कतार

''आओ हमें खरीदो
खरीदो हमारी आजादी
खरीदो स्वाभिमान
हम मण्डी में बिकने को तैयार
हम मण्डी बनने को तैयार''-
मचा हाहाकार
पर कुछ सिरफिरे
अभी भी हैं अड़े
विश्व-चलन के खिलाफ
डटे खड़े

मैक्सिको की औरत ने नकारा बाजार
सोमालिया के बूढ़े कंकाल भी-
कर रहे पुकार
नहीं चाहिए बाजार-नहीं चाहिए
बाजार
नहीं चाहिए बाजार...

रमणिका गुप्ता

('उद्‌भावना' अंक 73-74, अक्टूबर 06-मार्च 07 से साभार।)